सामायिक सूत्र

भाग-1 की पुस्तक में हमने सामायिक के बारे में संक्षिप्त रूप (Concise Form) में जाना था। इस पुस्तक में हम सामायिक का विस्तृत (Explanatory) रूप जानेगें। वैसे तो सामायिक की प्रतिज्ञा (Vow) लेने से पहले हमें सामायिक सम्बन्धी 9 सूत्रों (पाठों) का विधि सहित उच्चारण करना होता है। जिनका औचित्य (Purpose of Reading & Chanting) अलग-अलग है। फिर भी हम सामायिक प्रतिज्ञा के एक मूल पाठ का अर्थ हम यहां पर करेंगे (2 पाठों का अर्थ हम भाग 1 पुस्तक में कर चुके हैं) और शेष का अर्थ आगे करेंगे।

मूल पाठः

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाव नियमं मुहूर्त पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं
न करेमि, न कारवेमि, मणसा, वयसा, कायसा,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निदांमि, गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि।

अर्थः

करेमि भंते सामाइयं	हे भगवान (मैं) सामायिक करता हूँ
सावज्जं जोगं पच्चक्खामि	पाप सहित व्यापारों का त्याग करता हूँ (i.e. I Forbid All Actions, Which involve Sins)
जाव नियमं + मुहूर्त पज्जुवासामि	जब तक नियम की उपासना करुं (I worship till my Vow lasts)
दुविहं, तिविहेणं	दो करणः करना, करवाना तीन योगः मन योग, वचन योग, काया योग (ie With Two Fold Activities & Three Fold Yoga)
न करेमि, न कारवेमि	न स्वयं करुंगा, न करवाऊंगा। (I will not Do Myself Nor Will Make Others to do Sinful Activities)
मनसा, वयसा, कायसा	मन से, वचन से, काया से (By Mind, By Speech, By Body)

तस्स भंतेः पड़िक्कमामि	हे भगवान् उसका (पूर्व के किये हुए पापों) प्रतिक्रमण करता हूँ (O Lords, I Restrain & Remove My self from All the Sins of past)
निदांमि, गरिहामि	निदां करता हूँ, गर्हा करता हूँ (आत्म साक्षी से) (I hate or censure the sins with the Attestations of my Soul, I reprove the sins with the perception of my Darm Guru)
अप्पाणं वोसिरामि	अपनी आत्मा को अलग करता हूँ (पापों से) (I Vow to Free my Soul from Sins)

हमने पुस्तक भाग-1 में धर्म और पाप सम्बन्धित क्रियाओं (Activities Involving Dharm & Sins) के बारे में जाना था। **जैन धर्म के अनुसार सभी पाप क्रियाओं को 18 भागों में बांटा जा सकता है** और अगर हम इन 18 पाप क्रियाओ का करना बंद कर देगे तो धर्म (Dharm) स्वतः अपने आप हो जाएगा, उसके लिए हमें अलग से कोई और अन्य प्रयास नहीं करना पड़ेगा। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि 18 पापों की वृति और प्रवृति छोड़कर समभाव प्राप्त करने को सामायिक कहते हैं।

सबसे महत्व पूर्ण बात यह है कि सामायिक की अवधि के बीच हम कोई भी पाप क्रिया मन से, वचन से, काया से न करते हैं और न ही करवाते हैं।

सामायिक यदि पूर्ण विधि से ग्रहण की जाए और पारी (समाप्त) जाए तो विशेष लाभकारी रहती है।

सामायिक के 9 पाठ हैंः–

1. नवकार-सूत्र 2. गुरुवन्दन-सूत्र 3. सम्यक्त्व-सूत्र 4. आलोचना-सूत्र 5. कायोत्सर्ग-सूत्र 6. चतुर्विंशति-स्तव-सूत्र 7. प्रतिज्ञा-सूत्र (सामायिक-सूत्र) 8. शक्रस्तव-सूत्र 9. सामायिक-समाप्ति-सूत्र

सामायिक करने की विधिः

1. पहले स्थान, आसन, पूजंनी, मुखवस्त्रिका की प्रतिलेखना कर आसान बिछाएं। मुख पर मुखवस्त्रिका बांधे। विराजित साधु-सतियों को वन्दन करें या पूर्व-उत्तर दिशा में 3 बार तिक्खुतो के पाठ से गुरुवन्दना करें।
2. खड़े होकर नवकार मंत्र पढें, सम्यक्त्व सूत्र, आलोचना सूत्र और कायोत्सर्ग सूत्र पढ़कर ध्यान (Meditation) में स्थित होवें।

3. एक बार चतुर्विंशति-स्तव सूत्र पढ़ें। एक नवकार पढ़कर ध्यान खोलें।
4. अब पुनः बोलकर चतुर्विंशति-स्तव [लोगस्स] सूत्र पढ़ें
5. अब प्रतिज्ञा सूत्र पढ़े और एक सामायिक करनी हो तो मुर्हत। घड़ी 2 (दो सामायिक के लिए मुर्हत 2 घड़ी 4 बोलकर पढ़ें।)
6. फिर नीचे बैठकर बायां घुटना खड़ा कर, दोनों हाथ जोड़कर दो बार शक्रस्तव सूत्र (नमोत्थुणं का पाठ) पढ़ें। दूसरी बार में 'ठाणं संपताणं' के स्थान पर 'ठाणं संमापाविऊ कम्माणं' बोले और इसके बाद घड़ी में समय देखकर सामायिक की शुरुआत करें।

सामायिक पारने की विधिः

ऊपर लिखित विधि अनुसार प्रतिज्ञा सूत्र छोड़कर, बाकी सूत्रों को पढ़ते हुए अंत में समाप्ति सूत्र पढ़े और आखरी में तीन बार गुरुवन्दना सूत्र पढ़ें।

समाप्ति सूत्रः

"नौवें सामायिक व्रत के विषय में, जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोऊं। मन, वचन, काया का खोटा योग बरताया हो, सामायिक में समता न की हो, बिना पूगी पारी हो। 10 मन के, 10 वचन के, 12 काया के, इन 32 दोषो में कोई पाप-दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।"

सामायिक में स्त्री कथा/पुरुष कथा, भक्त (भोजन) कथा, देश कथा, राज कथा, इन 4 प्रकार की कथाओं से बचना चाहिए और आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा तथा परिग्रहसंज्ञा नामक इन 4 संज्ञाओं का सेवन नहीं करना है।

सामायिक में बैठने की मुद्रा

सम्यक्त्व सूत्र

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णतं तत्तं इअ सम्मतं मए गहियं ॥1॥

पंचिदियसंवरणो, तह नवविहबंभचेर गुत्तिधरो।
चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारसगुणेहिं संजुत्तो ॥2॥

पंचमहव्वयजुत्तो, पंच विहायारपालणसमत्थो।
पंचसमिओ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झं ॥1॥

इस पाठ में देव, गुरु और धर्म की पहचान के बारे में बताया गया है और किसी साधु में मुख्य रुप से क्या-2 गुण होने चाहिएँ, उनका वर्णन है।

अर्थः

अरिहंतो मह देवो	अरिहंत मेरे देव हैं
जाव-जीवं सुसाहुणो गुरुणो	जीवन पर्यन्त श्रेष्ठ साधु गुरु हैं
जिण पण्णतं ततं	जिन भगवान् द्वारा प्ररुपित तत्व (धर्म)
इयं सम्मतं मए गहियं	यह सम्यक्त्व मैंने ग्रहण किया है
पंचिदिय संवरणोः	पाँच इन्द्रियों (Senses) को संवर (Control) में करने वाले
तह	तथा इसी प्रकार
नवविह बंभचेर गुत्तिधरो	नौ प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले
चउविह कसाय मुक्को	4 प्रकार के कषायों से मुक्त
इय अट्टारस गुणेहिं संजुतो	इन 18 गुणों से सहित
पंच महव्वय जुतो	5 महाव्रतों से युक्त

पंच विहायार पालण समत्थो	5 प्रकार का आचार (Conduct) पालने में समर्थ (Competent)
पंच समिओ तिगुत्तो	5 समिति 3 गुप्ति
छत्ती गुणो गुरुमज्झं	36 गुणों वाले मेरे गुरु हैं (5+9+4+5+5+5+3=36)

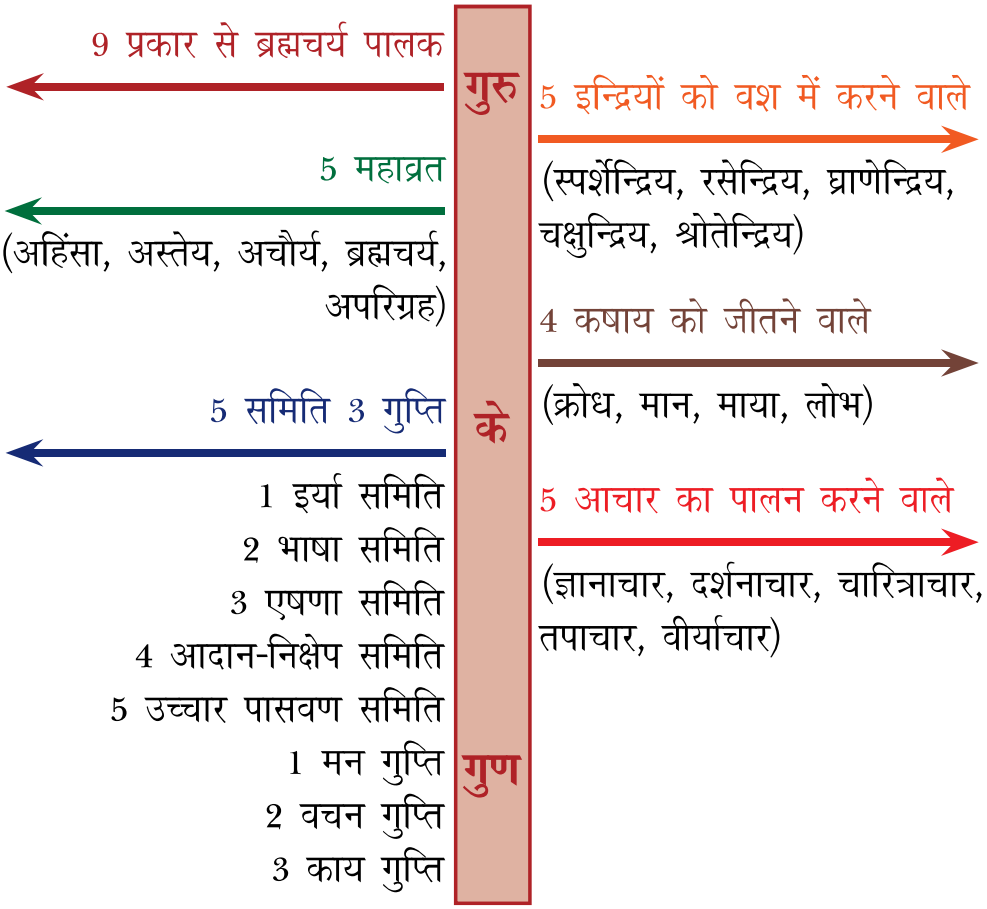

जैन साधु, उपर लिखित 36 गुणों के धारक होते हैं। 5 समिति, 3 गुप्ति को अष्ट प्रवचन माता भी कहते हैं। हमें किसी भी साधु-साध्वी में इन 36 गुणों के आधार पर ही श्रद्धा करनी चाहिए।

18 पापों के नाम

जैन धर्म के अनुसार, वैसे तो अनेक प्रकार के पाप होते हैं परन्तु फिर भी उनको संक्षिप्त रूप में 18 प्रकार से बताया जा सकता है, जो कि निम्नलिखित हैं:—

1.	हिंसा	Violence
2.	झूठ	Lie (Falsehood)
3.	चोरी	Stealing
4.	अब्रह्मचर्य	Non-Celibacy
5.	परिग्रह	Possession
6.	क्रोध	Anger
7.	मान (अहंकार)	Proud (Arrogant)
8.	माया (कपट)	Deceit (Deceptive)
9.	लोभ (लालच)	Greed
10.	राग	Attachement
11.	द्वेष	Hate
12.	कलह	Quarrel
13.	अभ्याख्यान(झूठा कंलक)	False Accusations
14.	पैशुन्य (चुगली)	Carrying Tales against Others
15.	पर परिवाद (निन्दा)	Being Pleased or Displeased with Trifles
16.	रति-अरति	Calumniating Others
17.	माया मृषावाद	Spreading Rumors or Scandals
18.	मित्थादर्शन शल्य	Believing in False Doctrines

एक सच्चे जैन गृहस्थ/श्रावक को उपर लिखित पापों से बचने का हर सम्भव प्रयास रखना चाहिए। तब ही हम भ. महावीर के सच्चे सिपाही कहलाएंगे।